१. भारतीय उपमहाद्वीप और इतिहास

१.१ इतिहास का निर्माण और भौगोलिक विशेषताएँ
१.२ भारत की भौगोलिक विशेषताएँ
१.३ भारतीय उपमहाद्वीप

१.१ इतिहास का निर्माण और भौगोलिक विशेषताएँ :

मानव और उसके आस-पास के परिसर के बीच किस प्रकार घनिष्ठ संबंध होता है; यह हमने पाँचवीं कक्षा में विस्तार से देखा है । आदिमानव के जीवन स्तर एवं तकनीकी विज्ञान में हुए परिवर्तन उसके परिसर में हुए परिवर्तनों से किस प्रकार संबद्ध थे; यह देखा । अश्मयुगीन संस्कृति से लेकर नदी तट की कृषिप्रधान संस्कृति तक की मानवीय संस्कृति की ऐतिहासिक यात्रा किस प्रकार संपन्न हुई; इसका हमने अवलोकन किया।

मानवीय संस्कृति की यात्रा में घटित सभी प्रकार की भूतकालीन घटनाओं के क्रमबद्ध तथ्यों की प्रस्तुति को इतिहास कहते हैं। स्थान, काल, व्यक्ति और समाज इतिहास के चार प्रमुख आधार स्तंभ अर्थात घटक हैं । इन चार घटकों को छोड़कर इतिहास का लेखन करना संभव नहीं है। इनमें से 'स्थान' घटक का संबंध भूगोल अर्थात भौगोलिक परिस्थिति से संबंधित है । इतिहास और भूगोल के बीच अटूट संबंध है । भौगोलिक परिस्थिति का इतिहास पर अनेक प्रकार से प्रभाव पड़ता है ।

हम जहाँ रहते हैं; उस परिसर की भौगोलिक विशेषताओं पर हमारी खान-पान, वेशभूषा, मकानों की बनावट, व्यवसाय आदि बातें अधिकांश रूप में निर्भर रहती हैं। हमारा सामाजिक जीवन भी इन्हीं विशेषताओं पर निर्भर रहता है । जैसे-पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का जीवन मैदानी प्रदेशों में रहने वाले लोगों की तुलना में अधिक परिश्रम से भरा होता है। पर्वतीय क्षेत्रों में खेती की उपजाऊ भूमि बहुत कम उपलब्ध होती है तो मैदानी प्रदेश में उपजाऊ भूमि अधिक मात्रा में पाई जाती है। परिणामस्वरूप पर्वतीय क्षेत्र में खाद्यान्न और साग-सब्जियाँ कम मात्रा में उपलब्ध होती हैं । इनकी तुलना में ये खाद्यान्न मैदानी प्रदेश के लोगों को पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं। इसका प्रभाव उनके खान-पान पर भी दिखाई देता है । पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को अन्न के लिए शिकार और जंगल में इकट्ठे किए गए पदार्थों पर अधिक मात्रा में निर्भर रहना पड़ता है । इस तरह पर्वतीय क्षेत्रों में रहनेवाले और मैदानी प्रदेश में रहनेवाले लोगों की जीवन प्रणाली में अन्य कई बातों में भी अंतर पाया जाता है ।

घरों के प्रकार

चलो, विचार-विमर्श करें ।

- तुम्हारे परिसर में कौन-कौन-से व्यवसाय चलते हैं?
- तुम्हारे परिसर में कौन-कौन-सी फसलें उगाई जाती हैं ।

हम जिस प्रदेश में रहते हैं; उस प्रदेश की जलवायु, वर्षा, खेती की उपज, वनस्पतियाँ और प्राणियों में पाई जाने वाली विविधता आदि बातें हमारे जीने के साधन होती हैं। उन्हीं के आधार पर उस-उस प्रदेश की जीवन प्रणाली और संस्कृति विकसित होती रहती है। जहाँ जीवनयापन के साधन विपुल मात्रा में होते हैं; वहाँ मानवीय समाज दीर्घकाल तक अपनी बस्ती बनाकर रहता है। कालांतर में इन बस्तियों का रूपांतरण ग्रामों और नगरों में हो जाता है। पर्यावरण का ह्रास, अकाल, आक्रमण अथवा अन्य कारणों से जीवन के साधनों का अभाव अनुभव होता है तो लोग गाँव छोड़ जाने को बाध्य हो जाते हैं। गाँव-बस्तियाँ, नगर उजड़ जाते हैं। इतिहास में ऐसी अनेक घटनाओं का घटित होना दिखाई देता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इतिहास और भूगोल के बीच अटूट संबंध होता है।

१.२ भारत की भौगोलिक विशेषताएँ :

हमारे भारत देश का विस्तार बहुत विशाल है। उसकी उत्तर दिशा में हिमालय, पूर्व दिशा में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम दिशा में अरब सागर और दक्षिण दिशा में हिंद महासागर हैं। भारत के अंदमान-निकोबार एवं लक्षद्वीप को छोड़कर शेष भूप्रदेश भौगोलिक दृष्टि से अखंडित है।

प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन करते समय हमें इस भूप्रदेश को ध्यान में रखना चाहिए क्योंकि इसी भूप्रदेश का उल्लेख हम प्राचीन भारत के रूप में करने वाले हैं। वर्तमान पाकिस्तान और बांगला देश ई. स. १९४७ के पूर्व प्राचीन भारत के अंग थे।

भारतीय इतिहास की विकास प्रक्रिया का विचार करें तो निम्न छह भूप्रदेश महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं।

१. हिमालय
२. सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र नदियों का मैदानी प्रदेश
३. थार का मरुस्थल
४. दक्खन का पठार
५. समुद्री तटों के प्रदेश
६. समुद्र में स्थित द्वीप

हिमालय पर्वत

१. हिमालय: हिंदुकुश और हिमालय पर्वत के रूप में भारतीय उपमहाद्वीप की उत्तर दिशा में मानो एक अभेद्य दीवार खड़ी हुई है। इस दीवार के कारण भारतीय उपमहाद्वीप मध्य एशिया के मरुस्थल से अलग हो गया है परंतु हिमालय पर्वत के खैबर और बोलन दर्रे में से एक व्यापारिक सड़क जाती है। यह सड़क मध्य एशिया से गुजरने वाले प्राचीन व्यापारिक मार्ग से जोड़ी गई थी। चीन से निकलकर एवं मध्य एशिया होकर अरब प्रदेश तक पहुँचने वाला यह व्यापारिक मार्ग 'रेशम मार्ग' के रूप में जाना जाता था। क्योंकि इस मार्ग द्वारा पश्चिमी देशों में भेजे जानेवाले माल में रेशम प्रमुख वस्तु थी। इन्हीं दर्रों में से आने वाले मार्ग से अनेक विदेशी आक्रमणकारियों ने प्राचीन भारत में प्रवेश किया। अनेक विदेशी यात्री भी इसी मार्ग द्वारा भारत में आए।

खैबर दर्रा

२. सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र नदियों का मैदानी प्रदेश:

यह मैदानी प्रदेश तीन बड़ी नदियों-सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक नदियों की घाटियों से बना है। यह प्रदेश पश्चिम में सिंध-पंजाब से लेकर

गंगा नदी

पूर्व में वर्तमान बांगला देश तक फैला हुआ है । इसी प्रदेश में भारत की अति प्राचीन नगरीय हड़प्पा संस्कृति और उसके पश्चात प्राचीन गणतांत्रिक राज्यों एवं साम्राज्यों का उदय हुआ ।

क्या तुम जानते हो ?

अफ्रीका महाद्वीप में सहारा मरुस्थल संसार का सबसे बड़ा मरुस्थल है ।

थार का मरुस्थल

३. थार का मरुस्थल: थार का मरुस्थल राजस्थान, हरियाणा और गुजरात के कुछ क्षेत्रों में फैला हुआ है । इस मरुस्थल का कुछ क्षेत्र वर्तमान पाकिस्तान में भी व्याप्त है । इसके उत्तर में सतलुज नदी, पूर्व में अरावली पर्वत की श्रेणियाँ, दक्षिण में कच्छ का रण और पश्चिम में सिंधु नदी है । हिमाचल प्रदेश में घग्गर नदी का उद्गम होता है और यह नदी थार के मरुस्थल में पहुँचती है । पाकिस्तान में यह हाक्रा नाम से जानी जाती है । राजस्थान और पाकिस्तान में इस नदी का पाट अब सूखा पड़ा है । इस सूखे पाटवाले क्षेत्र में हड़प्पा संस्कृति के अनेक स्थान बिखरे पड़े हैं ।

४. दक्खन का पठार : एक ओर पूर्वी तट और दूसरी ओर पश्चिमी तट और इनके बीच में स्थित भारत का भूप्रदेश दक्षिण दिशा में शंक्वाकार (संकरा) होता गया है । इस पठार के पश्चिम में अरब सागर, दक्षिण में हिंद महासागर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी हैं । तीन ओर से पानी से घिरा यह भूभाग समुद्र में किसी पर्वत की त्रिकोणीय चोटी के समान दिखाई देता है । इस भूप्रदेश को 'प्राय:द्वीप' कहते हैं । भारतीय प्राय:द्वीप का अधिकांश क्षेत्र दक्खन के पठार से व्याप्त है ।

दक्खनी पठार के उत्तर में सतपुड़ा और विंध्य पर्वत की श्रेणियाँ फैली हुई हैं । उसके पश्चिम में सह्याद्रि की पर्वतश्रेणियाँ हैं । उसे 'पश्चिम घाट' कहते हैं । सह्याद्रि की पश्चिमी तलहटी में कोकण और मलबार का तटीय प्रदेश है । दक्खन पठार के पूर्व में स्थित पर्वतों को 'पूर्व घाट' कहते हैं । इस पठार की भूमि उपजाऊ है तथा वहाँ हड़प्पा संस्कृति के पश्चातवाले कालखंड में अनेक कृषिप्रधान संस्कृतियाँ अस्तित्व में थीं । मौर्य साम्राज्य प्राचीन भारत का सबसे बड़ा साम्राज्य था और इस साम्राज्य में दक्खन का पठार सामाविष्ट था । मौर्य साम्राज्य के बाद भी यहाँ अनेक छोटे-बड़े साम्राज्य अस्तित्व में आए और नष्ट हुए ।

५. समुद्री तटों के प्रदेश : प्राचीन भारत में हड़प्पा संस्कृति के समय से पश्चिमी देशों के साथ व्यापार होता था । यह व्यापार समुद्री मार्ग से चलता था । परिणामस्वरूप भारत के समुद्री बंदरगाहों से विदेशी संस्कृतियों और लोगों के साथ भारत का संपर्क और लेन-देन होता था। कालांतर में सड़क मार्ग से भी व्यापार और संचार प्रारंभ हुआ । फिर भी समुद्री मार्ग का महत्त्व बना रहा ।

६. समुद्र में स्थित द्वीप : बंगाल की खाड़ी में स्थित अंदमान और निकोबार भारतीय द्वीप हैं । साथ ही भारतीय द्वीपों का समूह लक्षद्वीप अरब सागर में स्थित है। प्राचीन समय में चलने वाले समुद्री व्यापार में इन द्वीपों का महत्त्व रहा होगा । 'पेरीप्लस आफ दी एरिथ्रिएन सी' अर्थात 'लाल सागर की जानकारी

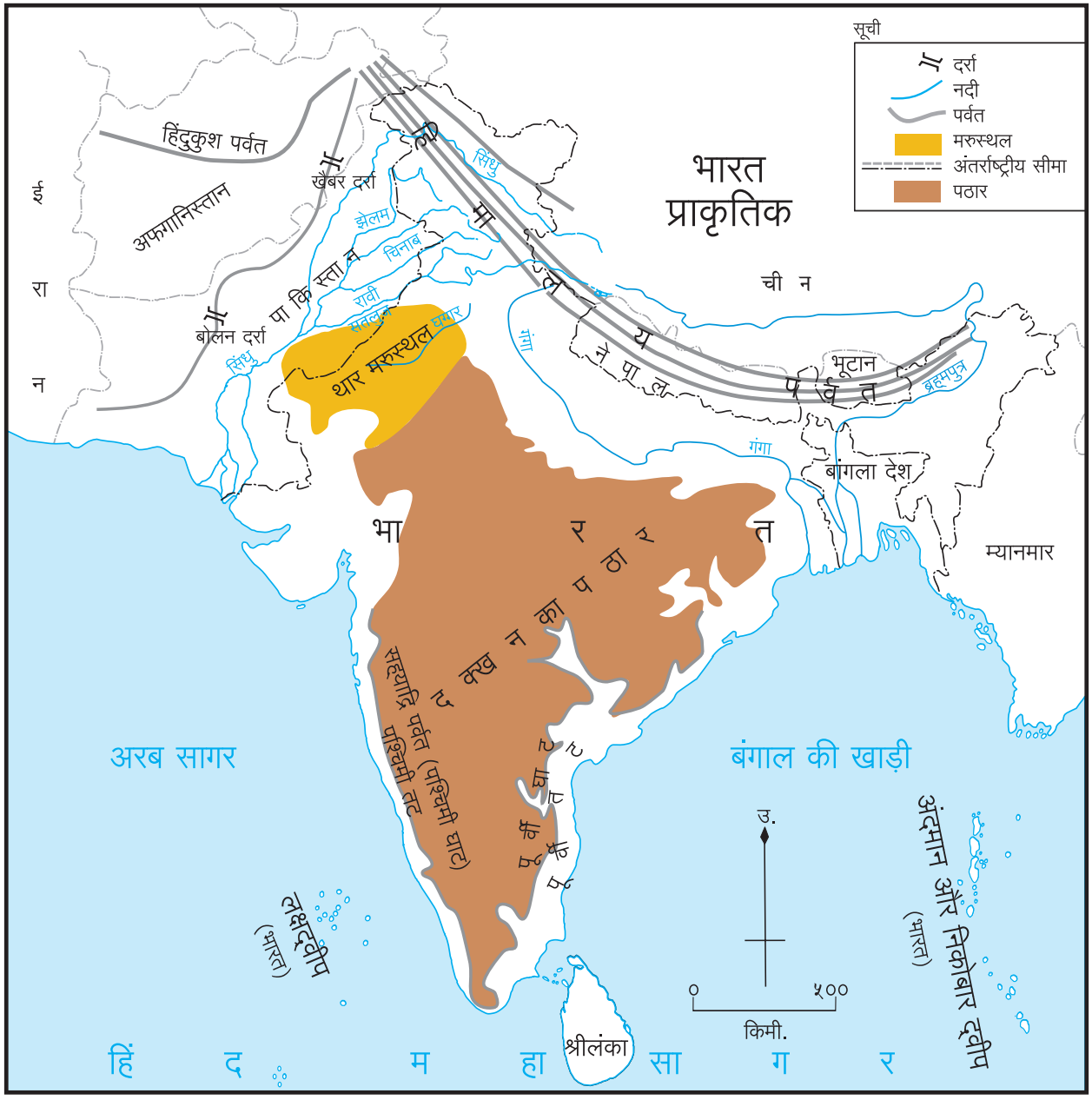

पुस्तिका ' नामक पुस्तक में भारतीय द्वीपों का उल्लेख मिलता है । यह पुस्तक एक अनाम ग्रीक नाविक द्वारा लिखी गई है ।

करके देखो ।

भारत के मानचित्र प्रारूप में निम्न स्थानों को अंकित करो ।

१. हिमालय पर्वत
२. थार का मरुस्थल
३. पूर्वी समुद्री तट

अंदमान द्वीप

१.३ भारतीय उपमहाद्वीप:

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो नगर वर्तमान पाकिस्तान में हैं। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान,

बांगला देश, श्रीलंका और हमारा भारत देश मिलकर बना हुआ संपूर्ण भूभाग 'दक्षिण एशिया' नाम से जाना जाता है । इस भूभाग में भारत देश के विस्तार और महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इस भूप्रदेश को 'भारतीय उपमहाद्वीप' भी कहते हैं । हड़प्पा संस्कृति का विस्तार प्रमुखत: भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर भाग में हुआ था ।

चीन और म्यानमार यद्यपि हमारे पड़ोसी देश हैं परंतु ये देश दक्षिण एशिया अथवा भारतीय उपमहाद्वीप के हिस्से नहीं हैं । फिर भी इन देशों के प्राचीन भारत के साथ ऐतिहासिक संबंध रहे हैं । प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन में इन देशों का महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

स्वाध्याय

१. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(१) इतिहास किसे कहते हैं ?

(२) मानवीय समाज दीर्घकाल तक अपनी बस्ती कहाँ बसाता है ?

(३) पर्वतीय क्षेत्र में रहने वाले लोगों को अन्न के लिए प्रमुख रूप से किसपर निर्भर रहना पड़ता है ?

(४) भारत की सब से प्राचीन नगरीय संस्कृति कौन-सी है ?

२. निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखो :

(१) मानव का सामाजिक जीवन किन बातों पर अवलंबित रहता है ?

(२) हम जहाँ रहते हैं, उस प्रदेश की कौन-सी बातें हमारे जीवनयापन की साधन होती हैं ?

(३) किस प्रदेश को 'भारतीय उपमहाद्वीप' कहते हैं ?

३. कारण लिखो ।

(१) इतिहास और भूगोल का संबंध अटूट होता है ।

(२) लोगों को गाँव छोड़कर जाना पड़ता है ।

४. पर्वतीय क्षेत्रों और मैदानी प्रदेशों के जनजीवन में पाए जानेवाले अंतर को स्पष्ट करो ।

५. पाठ्यपुस्तक में दिए गए भारत-प्राकृतिक मानचित्र का निरीक्षण करो और उसपर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो:

(१) भारत के उत्तर में कौन-सी पर्वतश्रेणियाँ हैं ?

(२) भारत की उत्तर दिशा से आनेवाले मार्ग कौन-से हैं ?

(३) गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों का संगम कहाँ होता है ?

(४) भारत के पूर्व में कौन-से द्वीप हैं ?

(५) थार का मरुस्थल भारत की किस दिशा में है ?

उपक्रम :

(१) अपने परिसर के जलाशयों की जानकारी लिखो ।

(२) संसार के मानचित्र प्रारूप में निम्न बातें दर्शाओ :

१. हिमालय पर्वत

२. रेशम मार्ग

३. अरब प्रदेश/अरबस्तान

* * *

6P4VYH

विविध वेशभूषा